ईसबगोल की खेती
कृषि कुंभ (जुन, 2022), खण्ड 02 भाग 01, पृष्ठ संख्या 27–29

ईसबगोल की खेती

दिलीप चौधरी[1], सुरज्ञान रुंडला[2], राजेंद्र चौधरी[3], राधा किशन चौधरी[4], विशाल[5], लोकेश कुमार[6]

[1]शोध छात्र– सस्य विज्ञान विभाग, नैनी एग्रीकल्चर इंस्टीट्यूट, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

[2]शोध छात्रा– सस्य विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय, चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

[3]शोध छात्र– सस्य विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय, वसंतराव नाईक मराठवाड़ा कृषि विद्यापीठ, परभणी

[4]शोध छात्र– कीट विज्ञान विभाग, आर. बी.एस.कॉलेज, बिचपुरी, आगरा

E.mail: dilipbkn1997@gmail.com

वानस्पतिक नाम– प्लांटैगो ओवाटा फोरस्क

कुल– प्लांटागिनेसी

ईसबगोल के सामान्य नाम– स्पोगेल, साइलियम बीज, ईसबगोल, पिस्सू बीज

ईसबगोल एक अत्यंत महत्वपूर्ण औषधीय फसल है। यह औषधीय फसलों के निर्यात में पहला स्थान हैं।

भारत में इसका उत्पादन मुख्य रूप से गुजरात, राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, छत्तीसगढ़ और मध्य प्रदेश में लगभग 50 हजार हेक्टेयर में होता है। राजस्थान के महत्वपूर्ण ईसबगोल उत्पादक जिलों में बाड़मेर, जालौर के बाद नागौर, चित्तौड़गढ़ और जैसलमेर शामिल हैं।

उपयोगी भाग

ईसबगोल के बीज और बीज की भूसी का उपयोग औषधीय उपयोग के लिए किया जाता है। इस पौधे के बीज की भूसी को आमतौर पर साइलियम कहा जाता है।

अनुकूल जलवायु

इसबगोल एक ठंडी मौसम वाली रबी की फसल है, और इसकी परिपक्वता के मौसम में शुष्क धूप मौसम की आवश्यकता होती है। यहां तक कि हल्की बारिश और बादल छाए रहने से बीज की कमी और उपज या उत्पादन में कमी हो सकती है। बीज अंकुरण के लिए इसे 20–25 डिग्री सेंटीग्रेड की आवश्यकता होती है।

भूमि

ईसबगोल की खेती के लिए अच्छी जल निकास वाली काली मिट्टी या दोमट या बलुई दोमट मृदा जिसका पी.एच. मान 7–7.5 हो उपयुक्त होती है। बलुई दोमट मिट्टी जिसमें जीवाश्म की मात्रा अधिक हो, सर्वोत्तम मानी जाती है।

भूमि की तैयारी

बीजों के बेहतर अंकुरण के लिए बारीक जुताई आवश्यक है। मिट्टी की स्थिति के

आधार पर, भूमि की जुताई की जानी चाहिए और अच्छी तरह से हैरो किया जाना चाहिए।

ईसबगोल की खेती में बीज दर, बुवाई और दूरी

ईसबगोल ठंडे मौसम की फसल है जिसे रबी की फसल के रूप में उगाया जाता है। ईसबगोल की बीज दर 1 एकड़ भूमि को कवर करने के लिए 3 से 4 किलोग्राम या 1 हेक्टेयर भूमि को कवर करने के लिए 8 से 9 किलोग्राम बीज की आवश्यकता होती है। बीज को पंक्ति से पंक्ति में 30 सेमी और पौधे से पौधे को 4 से 5 सेमी की दूरी पर बोना चाहिए। ईसबगोल की बुवाई का समय अक्टूबर से नवंबर है।

गहराई

बीज 1 से 2 सेंटीमीटर से अधिक गहरा नहीं बोना चाहिए।

बीज उपचार

बीज जनित रोग जड़ गलन की रोकथाम हेतु बीज को 2.5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से केप्टान या थीरम या मेंकोजेब फफूंदनाशक से उपचारित करना चाहिए।

उन्नत किस्में

जी आई–1 (गुजरात ईसबगोल–1), जी आई–2 (गुजरात ईसबगोल–2), टीएस 1–10, निहारिका, हरियाणा ईसबगोल 1–5, जवाहर ईसबगोल– 4, आर आई– 89, आर आई– 1

निराई–गुड़ाई

फसल की स्वस्थ वृद्धि और उपज के लिए खरपतवार नियंत्रण बहुत महत्वपूर्ण है। ईसबगोल की फसल के शुरुआती विकास के दौरान फसल को खरपतवार मुक्त रखने के लिए 2 से 3 निराई–गुड़ाई करनी चाहिए। खेत में बुवाई के 3 सप्ताह बाद पहली निराई करनी चाहिए।

खरपतवारों को नियंत्रित करने के लिए प्रति हेक्टेयर 500 से 700 ग्राम सक्रिय संघटक की दर से आइसोप्रोट्यूरॉन को बीजों के अंकुरण से पहले खेत में स्प्रे करते हैं।

ईसबगोल के पौधों की सिंचाई

बुवाई के तुरंत बाद धीमी गति से हल्की सिंचाई करें। 6–7 दिन के बाद खराब अंकुरण होने पर दूसरी सिंचाई करनी चाहिए। बलुई दोमट मिट्टी में आमतौर पर 3 सिंचाई की आवश्यकता होती है। अंतिम सिंचाई दुग्ध अवस्था में करनी चाहिए।

ईसबगोल फसल में खाद और उर्वरक

अच्छी तरह से विघटित गोबर की खाद 10 से 15 टन का उपयोग किया जाता है। फसल को नाइट्रोजन के बहुत कम स्तर की आवश्यकता होती है। सामान्य तौर पर, 20 से 30 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर नाइट्रोजन और 15 से 25 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर फॉस्फोरस का आवेदन इष्टतम है।

नाइट्रोजन की आधी खुराक और फॉस्फोरस की पूर्ण खुराक को अंतिम जुताई के साथ लागू किया जाना चाहिए और बुवाई के बाद 40 दिनों में नाइट्रोजन की आधी खुराक को लागू किया जाना चाहिए।

फसल चक्र–

ईसबगोल की खेती के लिए नाइट्रोजन उर्वरक का उपयोग खरीफ मौसम के दौरान मूंगफली, मूंग या उड़द जैसी फलीदार फसलों के साथ फसल चक्र अपनाकर कम किया जा सकता है। भारत के विभिन्न भागों में निम्नलिखित फसल चक्र अपनाए जा रहे हैं।

सोयाबीन– ईसबगोल

मूंगफली – ईसबगोल

मक्का– ईसबगोल – मूंग

रोग और कीट प्रबंधन

मृदुरोमिल आसिता – मृदुरोमिल आसिता ईसबगोल की प्रमुख बीमारी है। यह रोग ईसबगोल के पौधों पर बाली लगने के दौरान देखने को मिलता है । यह रोग पौधे के विकास को पूरी तरह से रोक देता है, जिससे पैदावार अधिक प्रभावित होती है । इस रोग से प्रभावित पौधों की पत्तियों पर सफेद चूर्ण एकत्रित हो जाता है। यह बीमारी प्रभावी रूप से बीज उपचार द्वारा मेटलैक्सिल 5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज और मेन्कोजेब 3 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज से नियंत्रित कर सकते है। रोग की पहली घटना पर मेटलैक्सिल 0.2 प्रतिशत छिड़काव, दूसरे छिड़काव के बाद 12–14 दिन का अंतराल होना चाहिए।

पैदावार

ईसबगोल के एक हेक्टेयर के खेत से तकरीबन 10 से 12 क्विंटल का उत्पादन प्राप्त हो जाता है, जिसके दानो से 20 से 30 प्रतिशत तक भूसी प्राप्त हो जाती है।

स्वास्थ्य बेनिफिट्स, औषधीय गुण, इसाबोल के उपयोग–

- इसबगोल कब्ज से राहत दिलाता है।
- इसबगोल दस्त को नियंत्रित कर सकता है।

मोयला– मोयला इस फसल का प्रमुख कीट है। बुवाई के बाद आमतौर पर 50 से 60 दिन बाद एफिड्स दिखाई देते हैं। यह कीट पौधों के कोमल भागो का रस चूसकर उन्हें नष्ट कर देता है। 12 से 15 दिनों के अंतराल पर 0.025 प्रतिशत ऑक्सीडेमेटन मिथाइल के दो छिड़काव कीट को प्रभावी ढंग से नियंत्रित कर सकते हैं। सफेद ग्रब और दीमक भी जड़ों को काटकर फसल को नुकसान पहुंचा सकते हैं।

फसल की कटाई

ईसबगोल के पौधे बीज रोपाई के तकरीबन 110 से 120 दिन बाद कटाई के लिए तैयार हो जाते है। जब इसके पौधों पर लगी पत्तिया सूखकर पीले रंग की दिखाई देने लगे उस दौरान इनकी तुड़ाई कर ली जाती है। इसके पौधों की कटाई के लिए सुबह का समय सबसे अच्छा माना जाता है, क्योकि इस दौरान बालियों से बीज कम मात्रा में टूटते है।

- इसबगोल पाचन में सुधार करता है।
- इसबगोल बृहदान्त्र को साफ करता हैं।
- इसबगोल वजन घटाने प्रबंधन में मदद करता है।
- इसबगोल अम्लता से राहत देने में मदद करता है।
- इसबगोल रक्तचाप को कम करने में मदद करता है।
- इसबगोल मधुमेह को नियंत्रित करने में मदद करता हैं।